मैत्रेयीकृति

हिंदी ई पत्रिका

विद्यार्थियों के लिए विद्यार्थियों के द्वारा

वर्ष-4, अंक 7-8
जनवरी-दिसंबर 2022

मैत्रेयीकृति (हिंदी ई-पत्रिका)

मैत्रेयी महाविद्यालय

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा ए++ ग्रेड प्राप्त

दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो.हरित्मा चोपड़ा
कार्यकारी प्राचार्या

डॉ.पुष्पा गुप्ता
हिंदी विभाग

रूपा
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

भावना
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

मानसी चौधरी
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

चंचल
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

तन्वी
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

संरक्षण एवं परामर्श: प्रो.हरित्मा चोपड़ा
संपादन: डॉ.पुष्पा गुप्ता
आवरण पृष्ठ: भावना
चयन,टंकण एवं तकनीकी संपादन : रूपा, मानसी चौधरी, तन्वी, चंचल

शुभकामना संदेश

वर्ष 2022 के प्रारंभ से ही मन में आशा की किरण जगमगाने लगी थी और अंततः फरवरी का महीना महाविद्यालय में विद्यार्थियों के पुनरागमन का संदेशवाहक बना। पिछले दो सालों से इंटरनेट और तकनीक के माध्यम से ऑनलाइन चल रही शिक्षण की प्रक्रिया अब पुनः प्रत्यक्ष संवाद में गतिशील हो गई थी। विद्यार्थियों के समूह से गुंजित परिसर हिलोरें लेते सागर-सा लग रहा था, जिसे पुनः देखने का अपना एक अनूठा आनंद था। ऐसा लग रहा था मानो प्रसन्नता, रंग, उत्साह का यह दृश्य बिल्कुल ही नया है। महाविद्यालय के समूचे परिसर में व्याप्त सकारात्मकता विद्यार्थियों को प्रत्येक कदम पर रचनात्मक गतिशीलता की ओर प्रेरित कर रही थी। कल्पना और यथार्थ के साथ मिलकर यह सृजनात्मकता आकाश की ऊंचाइयों तक पहुंचे,ऐसी मेरी शुभकामना है।

प्रो.हरित्मा चोपड़ा

कार्यकारी प्राचार्या

संपादकीय

आज के कल में बदलने का क्रम निरंतर गतिशील हैं अतः उम्मीद से भरी दृष्टि का भविष्योन्मुखी होना भी एक स्वाभाविक क्रम है। यूं तो ऑनलाइन के माध्यम से शिक्षण, पठन-पाठन, रचनात्मकता की प्रक्रिया गतिशील थी, लेकिन सीमित दायरे में। अप्रत्यक्ष संवाद की स्थिति ने जीवन में ठहराव और स्थगन का भाव भर दिया था, जिसमें ठहरे हुए जल की भांति न्यूनतम लहरों का अस्तित्व आनंद की अनुभूति को भी सीमित कर रहा था। जैसे ही महाविद्यालय में शिक्षण एवं पठन-पाठन की स्वाभाविक स्थिति प्रारंभ हुई तो प्रत्यक्ष संवाद भी पुनः संभव हो गया।तब अनायास ही कवि कुंवर नारायण की पंक्तियां मन में कौंध गयीं:

"तुमसे फिर मिलना
एक नया अवसर है
कि जारी रहे वह संवाद
जो बीच में ही
छूट गया था अधूरा"

रस,रंग,भाव, रूप,सौंदर्य,मानवीय संस्पर्श की उपस्थिति ने मानो जादू-सा किया और नव गति, नव लय, नव सौंदर्य, नव रचनात्मकता फिर से मुखर होने लगी।पत्रिका के इस अंक में संकलित रचनाओं, चित्रों और छाया चित्रों में सामाजिक मन:स्थिति के अनुरूप हर्ष और विषाद दोनों के रंग हैं।

इस वर्ष भी पत्रिका का यह अंक संयुक्त (7-8) कर दिया गया है।पत्रिका के इस संयुक्तांक को आप सब को सौंपने से पहले मैं प्राचार्या प्रो.हरित्मा चोपड़ा के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं क्योंकि प्रत्येक स्थिति में उनकी सहृदयता और मार्गदर्शन ही पत्रिका के लिए जीवनामृत का काम करता है। विभाग तो प्रत्येक स्थिति में धन्यवाद का अधिकारी है ही। अंत में पत्रिका से प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रुपों में संबंद्ध विद्यार्थियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं जिनके कारण पत्रिका का यह अंक रूपाकार पा सका।

डॉ.पुष्पा गुप्ता

हिंदी विभाग

छात्र संपादकीय

यह मेरा सौभाग्य हैं कि मैं मैत्रेयी महाविद्यालय की विद्यार्थी हूं जहां हमें अपनी योग्यताओं और संभावनाओं को जांचने व परखने के भरपूर अवसर मिलते हैं। इसी क्रम में मैं अपने विभाग की ई पत्रिका मैत्रेयीकृति से जुड़ी। मेरे लिए यह एक सुनहरा अवसर था क्योंकि मेरे कॉलेज जीवन का प्रारंभ तो ऑनलाइन शिक्षा से हुआ था जिसके कारण पढ़ने के अतिरिक्त अलग-अलग क्षेत्रों में मिलजुल कर काम करने के अवसर सीमित हो गए थे। जब मैंने अपने साथियों के साथ मिलकर पत्रिका के लिए रचनाओं को पढ़ा, जांचा, चुना और टंकित किया तो मेरे अंदर आत्मविश्वास जागृत हुआ। फिर हम सब ने सीमित समय में ही कार्य को पूरा करने का प्रयास किया। इस अवसर ने मेरे भीतर के संकोच को कम करके समूह में सहभागिता से काम करना सिखाया।

रुपा

हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

अनुक्रमणिका

साहित्य..... 1

हरित सृष्टि..... 2

अंशिका अवनी..... 2

मैट्रो का आनंद 2

निधि 2

माँ..... 3

जान्हवी मौर्य 3

हारने का इरादा 3

तनिषा राय..... 3

ओह ! ये कैसा समय आ गया हैं..... 4

अंकिता..... 4

आशा की किरण..... 5

निधि 5

माँ..... 5

कनक मंडल..... 5

बिहार..... 6

आस्था सिंह कुशवाहा..... 6

ख्वाहिश 7

खुशी गुप्ता 7

मेरे शरीर को जलाया..... 7

आस्था..... 7

आप बदल सकते हो 8

हिमांशी कोली 8

समय की कीमत 8

अंजली..... 8

मेरा मन 9

शोभा यादव 9

जिंदगानी 9

भूमिका फोगाट..... 9

स्त्री..... 10

सृष्टि 10

पश्चाताप से सफलता 10

चीनू तोमर 10

सफलता 11

आकांक्षा मिश्रा..... 11

हिंदी..... 11

नुपुर जोरासिया 11

शुरुआत एक नए सफ़र की 12

ज्योति..... 12

एक अच्छी पुस्तक 12

सुकन्या..... 12

जीना सीख लिया..... 13

कनक मंडल..... 13

दो पल सुंदर जिंदगी..... 13

रूपा..... 13

वह 14
मानसी चौधरी 14
हर सुबह 14
साक्षी त्रिवेदी 14
अजीब होता है इंसान भी 15
मानसी चौधरी 15
दो पल की जिंदगी 15
तन्वी मलिक 15
विदाई 16
शुभिका 16
वह गगन 16
आदित्य प्रभाकरण 16
मेरे देश को जागृत होने दो 17
कोमल पाल 17
मैं 17
विधि अहलावत 17
मेहनत करो 18
यामिका 18
दोस्ती 18
अनुराधा कुमारी 18
मगर 18
अंकिता सिंह 18
तुम स्वयं के लिए काफी हो 19
दीप्ति 19
तीसरी दुनिया 20
ईशिका आर्यन 20
घर 21
सपना निधि 21
माँ 22
सपना निधि 22
सफर खूबसूरत है 23
मानसी चौधरी 23

तूलिका और रंग-संयोजन 24

मेरा गिटार 25
हिमांशी कोली 25
पत्तियां 26
हिमांशी कोली 26
छवि 27
हिमांशी कोली 27
यूँ ही सोचते हुए 28
हिमांशी कोली 28
हम-तुम 29
अदिति सेतिया 29
सामने देखते हुए 30
अदिति सेतिया 30
रात्रि दृश्य 31
राशि व्यास 31

कैमरे की आँख और कॉलेज परिसर..... 32

मेरा प्यार 33
अनुशिखा चौधरी 33
हरा और सूखा पेड़ 34
अनुशिखा चौधरी 34
भरपूर खिला 35
अनुशिखा चौधरी 35
प्रवेश मार्ग 36
अनुशिखा चौधरी 36
श्वेत-श्याम 37
अनुशिखा चौधरी 37
औचक ही..... 38
अनुशिखा चौधरी 38
दीवारों में बंधा आकाश 39
अनुशिखा चौधरी 39
उत्सव सज्जा..... 40
अनुशिखा चौधरी 40
मेरा सुंदर कॉलेज 41
मुस्कान धनकर 41
झांकती किरणें..... 42
मुस्कान धनकर 42
कोमल स्पर्श 43
मोनालिसा मंडल..... 43
सामने से 44
मोनालिसा मंडल..... 44
अकेला फूल..... 45
तेजस्विनी बैंदा..... 45
सूरज डूबते हुए 46
राशि व्यास..... 46
छायापथ..... 47
राशि व्यास..... 47

साहित्य

हरित सृष्टि

निशा चाँदनी बरसे जब
ओस भरी उन बाँहों में
अरण्य शीत सी ओट छुपी है
गगनचुंबी तारों में

किसने कहा कि नदियों को
सर्दी ना लगती रातों में
स्पर्श की जो झर-झर धारा
हिम छलक गया हाथों में

नए वर्ष की रात नयी है
"साल वृक्ष" तो सदियों का
संग्रह बना है, इतिहास है
पर्वत,रंगीन कलियों का

भारतवर्ष का टुकड़ा यह
बेनाम पड़ा है कोने में
विविध भूमि रंगों की
भारत माँ की प्रिय है

बात जहां की छेड़ी है
झारखंड उसका नाम हैं
गुलशन भरी शाम हैं
रंगमंच पर सजे कला के रंग हैं
किस्सों के समंदर में

अंशिका अवनी
अंग्रेजी विशेष तृतीय वर्ष

मैट्रो का आनंद

तांगा हो या कोई मोटर
बस, बाइक अथवा स्कूटर
निकली सब पर भारी मैट्रो
हम तेरे आभारी मैट्रो
कहीं धरा के नीचे-नीचे
ले जाती है मीलों खींचे
फिर धरा के ऊपर आकर
चढ़ जाती है ऊँचे पुल पर
इसकी सुंदरता के क्या कहने
साफ-सफाई है इसके गहने
फ़र्श चमकता शीशे जैसा
नहीं तनिक वह ऐसा-वैसा
धुआँ ना देता इसका इंजन
इससे रहता दूर प्रदूषण
सबको मैट्रो खूब पसंद
अद्भुत है इसका आनंद
दुनिया भर की रेलों में
सचमुच है पटरानी मैट्रो
लगती है दीवानी मैट्रो
मोहक सुखद सुहानी मैट्रो
महानगर के महासफर की
रचती प्रेम कहानी मैट्रो

निधि
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

माँ

खुद भूखा रह कर
हमको खिलाती है।
ये वो माँ है जो हमको
अपने आँचल में छुपाती है।

खुद रात भर जागकर,
हमको सुलाती है।
ये वो माँ है जो हमको
अपने आँचल में छुपाती है।

अपनी जान से भी
ज्यादा प्यार देती है
ये वो माँ है, जो हमको
अपने आँचल में छुपाती है।

खुद रो कर हमको
हँसना सिखाती हैं।
ये वो माँ है, जो हमको
अपने आँचल में छुपाती है।

साथ हैं मां का तो
दुनिया में अपनी
ही अलग शान है।
ये वो माँ है,
जो हमको अपने
आँचल में छुपाती है।

खुद अनपढ़ हो कर भी
अपने बच्चे को पढ़ाती है।
ये वो माँ है जो
हमको अपने
आँचल में छुपाती है।

पढ कर बच्चा,
माँ को ही भूल जाता है,
वो माँ है जो हमको
अपने आँचल में छुपाती है।

पढ़ कर बन गया साहब है,
इसलिए माँ को छोड़ दिया
अनाथ आश्रम है।
वो माँ है जो,हमको अपने
आँचल में छुपाती है।

ना जाने क्यों ?
आज भी समाज में
माँ को समझा नही जाता है
ये तो वो ही माँ है न ,
जो हमको अपने
आँचल में छुपाती है।

जान्हवी मौर्य
बी. ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष

हारने का इरादा

कभी हारने का इरादा हो
तो उन लोगों को
याद कर लेना
जिन्होंने कहा था
तुमसे ना होगा।

तनिषा राय
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

ओह ! ये कैसा समय आ गया हैं

ओह ! ये कैसा
समय आ गया है?
ओह ! ये कैसा
समय आ गया है?
इंसान का इंसानियत से
विश्वास उठता जा रहा है।
बाहर तो बाहर
घर में भी परिवार पर ही
विश्वास खत्म-सा हो रहा है
ओह! ये कैसा
समय आ गया है?

जहाँ पहले आदमी
रिश्ते-नाते के लिए
दुश्मन से लड़ जाता था
अब अपने ही
अपनों के दुश्मन
होते जा रहे हैं
रिश्तों में दरार
आती जा रही है
ओह! ये कैसा
समय आ गया है?

झूठे वादे कर
देश के उज्ज्वल भविष्य के नाम
अपने ही देश को लूटते हैं ।
वादे तो सबने किए
परंतु अमल किसी ने न किया।
ओह! ये कैसा
समय आ गया है।

पहले जहाँ बेटियों को
देवी समान मानते थे
आज वहीं बेटियां
अपने ही देश में
सुरक्षित नहीं है।
दहेज की खातिर
बेटियों को जलते देखा है
पैसों से लड़कियों को खरीदा,
बेचा व उनका शोषण
होते देखा है।
ओह! कैसा
समय आ गया है?

बाप को बेटे से
झगड़ते हुए देखा है
माँ को घर से
निकलते देखा है।
भाई को भाई का खून
करते देखा है
पैसों की खातिर
अपनों का बदलता
रूप देखा है।
ओह ! ये कैसा
समय आ गया है?

अंकिता
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

आशा की किरण

रुक सी गयी जिंदगी,
थम सा गया था समय
विलायत से वतन वापसी के
अभियान चल पड़े,
मजदूरी की मजबूरी ने
तो ऐसे दिन दिखाये,
कुछ नंगे पैर घर लौटे आये।

व्यापार, दफ्तर, चौराहे ,
संस्थान, बाज़ार,
सूनी पड़ी सडकें
चौपट हुए कारोबार,
अचानक पल भर में
ये क्या हुआ,
है कोई दैवी प्रकोप या
बस सूक्ष्म जीवाणु का कहर।

चारों ओर छा गए
तिमिर के बादल घने,
भोर की आस
पर नहीं दिख रहा प्रकाश,
समय बीता आई
अंबर से एक दीप्ति विशेष,
अंधकार में से सूर्य-किरण
मानो दे रही कोई संदेश ।

सिखा दिया उसने,
समय सदैव एक-सा नहीं रहता,
परिस्थिति चाहे जो हो,
सदा ही आगे बढ़ते रहना,
जटिल वक्त का भी
निडर होकर तुम सामना करना,
थमना- मरना एक समान,
संघर्ष ही तो है जीवन का नाम ।

ये महामारी तो है
मनुष्य के स्वार्थ का परिणाम,
औद्योगिकीकरण की दौड़ छोड़,
प्रकृति से प्यार करो,
आपदा में अवसाद त्याग
आशावादी बनो,
लेकर अपनी गलती से सीख,
प्रकृति की सुंदरता का सम्मान करो।

निधि
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

माँ

मां तुम हो कितनी प्यारी
लगती हो मुझको सबसे न्यारी
रखती तो हो तुम सब का ख्याल
कौन उठाएगा तुम पर सवाल।।

कनक मंडल
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

बिहार

थोड़ी घिसी-पिटी,
थोड़ी नासमझ-सी,
हम उस विचार से हैं,
कोई पूछे जो पहचान तेरी,
कह देना हम बिहार से हैं

उस मिट्टी में हैं जन्मे हम,
जहाँ गौतम बुद्ध को
ज्ञान मिला,
पर 90 के दशक में
हमको हर बच्चा अज्ञानी मिला
जहाँ पगड़ी माथे पर
ऐसे लहराती है,
जैसे गंगा की शीतल धारा
मधुर संगीत सुनाती है।
आओ कभी तो देखना
कि क्या खुशबू वहाँ की
मिट्टी में है
पिज़्ज़ा, बर्गर तो कूल है
पर असली मज़ा तो
चोखे और लिट्टी में है।

जिस आम को
आप फल समझते हैं,
हमारा तात्पर्य
उसके अचार से है
और कोई पूछे जो पहचान
तेरी कह देना
हम बिहार से हैं।

मित्र तो फिर भी मित्र हैं,
हम दुश्मन को भी
गले लगाते हैं।
Guys, Buddies यह सब

आपके ढकोसले हैं,
हम तो
'बबुआ' कहकर बुलाते हैं।

बाज़ार के चकाचौंध में
उद्देश्य अपने, विचार अपने हैं ,
'हाँ' सीना ठोक कर
कहते हैं कि हम बिहार से हैं...

तुम उगते सूरज को
मानते हो,
हम डूबते सूर्य को भी पूछते हैं
और भाषा की मर्यादा
हम बेहतर जानते हैं
बदल रही है
अब वो मिट्टी भी
हम उस बदलते बिहार से हैं,
कोई पूछे जो पहचान
तेरी कह देना
हम 'बिहार' से हैं।

आस्था सिंह कुशवाहा
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

ख्वाहिश

थोड़ा ही सही
मगर दे दे
ए देने वाले
मुझको सब्र दे दे।
इतना ही है कि
मेरे पाँव सलामत रखना
तू मंजिल नहीं
मुझे बस सफर दे दे
अगर हुई कोई खता
तो सजा दे दे,
बस दिल ना दुखाऊँ
किसी का, यह अदा दे दे।
जल सकूं एक
दीपक की तरह
मगर उस सूरज का भी
मुझे तो पता दे दे।
थोड़ी-थोड़ी खुशियाँ
तो थोड़ा-सा गम दे दे।
दूसरों के काम आ सके
ऐसा कोई मरहम दे दे।
तुझसे और खुद से
कभी हटे ना विश्वास मेरा
सभी मुश्किलों से लड़ सके,
उतना साथियों का दम दे दे।

खुशी गुप्ता
समाजशास्त्र विशेष प्रथम वर्ष

मेरे शरीर को जलाया

मेरे शरीर को जलाया
पर क्या तुम मुझको जला पाओगे ?
मेरी इच्छाओं को, मेरे सपनों को,
मेरे मन को मेरी आत्मा को
तुम क्या छू पाओगे ?
तुम तो मूर्ख हो जो
यह पागलपन कर बैठे,
पर क्या इस पागलपन का
तुम उस ईश्वर को
जवाब दे पाओगे?
जिंदगी भर का
आघात मुझे देकर
क्या तुम
सुख से रह पाओगे?
जलना तो
एक दिन सब को है
तुम भी एक दिन
जल जाओगे।
फर्क तो इतना होगा-
मुझे प्राणों के साथ
जलाया है और तुम
बिन प्राण जल जाओगे,
पर इसके बाद भी
क्या मुक्ति तुम पाओगे?

आस्था
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

आप बदल सकते हो

एक शिक्षक बनो
जो बच्चों को कौशल
और शिक्षा से भर दे।
मजदूर बनो
हिम्मत से इमारत बनाओ।
पत्रकार बनो
जो अपनी कलम से
खबर रचते हैं
या स्वयं किसी और की
खबरों में छपते हैं|
उन सवालों को खोलो
जिनका जवाब दुनिया ढूंढती है।
अपनी पहचान बनाओ
जो दूसरों पर नहीं
खुद पर विश्वास करो।
समझो कि जो वक्त का
मजाक बनाता है,
वही हवा में गुम हो जाता है।
सबकी आवाज बनो
और समय को देखकर
अपनी शैली बदलो।
अपना निर्णय लो
भीड़ से दोस्ती करो।
या खुद से बेवफा हो जाओ
काल के सामने
जो टिक जाता है वही
दिन और रात हो जाता है।
हर आत्मा के साथ जुड़ो,
आप अपने अनुसार
अपना व्यक्तित्व बदलो,
अपने तार, अपनी पतंग बनो,
अपनी उड़ान बनो।
अपनी मदद जो खुद करता है
वह आकाश बन जाता है।
अपनी बात सुनो
खुद को सफल बनाओ।

हिमांशी कोली
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

समय की कीमत

समय की कीमत
तुम समझोगे,
तो समय तुम्हारी
कीमत समझेगा।
कद्र करो तुम
समय की आज,
तो फिर न कल
तुम पछताओगे।
अगर आज समय को
दोस्त बनाओगे तो
हंसते-हंसते कल
पूरा जीवन बिताओगे।

अंजली
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

मेरा मन

मेरा मन कभी यहां भटकता है,
तो कभी वहां भटकता है।
कोई कुछ कहता है तो
भावुक हो उठता है।
मैंने समझाया बहुत मगर
सुनता मेरी एक नहीं
मालूम नहीं कहाँ मगर
जाना तो चाहता है यह कहीं
मैंने रोका बहुत मगर
यह मेरी सुनता भी तो नहीं।
कभी शांत हुआ करता था
मगर आज हैं
इसमें समंदर कई।
कभी नाचता है तो कभी गाता है
यह मेरा मन है
जो भागता ही रहता है।
कभी खिल उठता है
छोटी-मोटी बातों से
तो कभी संभलने में
समय लगता है।
दुखी तो बहुत होता है मगर
बताना नहीं चाहता मेरा मन
वह कहते हैं ना कि डूबते को
तिनके का सहारा है।
वैसे ही है मेरा मन ही
मेरे लिए खुशियों का पिटारा है।

शोभा यादव
बी.ए. प्रोग्राम तृतीय वर्ष

जिंदगानी

यहाँ हर दिल में
एक अधूरी सी कहानी है।
तन्हाई में हर
किसी की जिंदगी रूहानी है।
बाहर से तो
हर चेहरा मुस्कुरा रहा है,
अंदर से टटोलोगे तो
हर मन उदास है।
कुछ याद लेकर बैठे हैं
तो कुछ किस्से लिए बैठे हैं,
यहाँ लोग एक दिल में
कई किस्से लिए बैठे हैं।
कोई दर्द कह देता हैं
तो किसी को कहना नहीं आता
कोई सबको प्यार बाँटता है
पर अपना हिस्सा
रख नहीं पाता
सब की आदत
औरों को जानना
और अपनी छुपाना है।
सब की अलग कहानी है,
यही जिंदगानी है।

भूमिका फोगाट
बी.ए.प्रोग्राम तृतीय वर्ष

स्त्री

जिंदगी की कहानी से
एक गीत लाई हूँ,
एक स्त्री का जीवन
तुम्हें सुनाने आई हूँ।
परिवार से शुरू,परिवार पर खत्म,
सब खुशियां पहले बाद में अपने गम।
बेटी होकर भी उसने
बखूबी अपना किरदार निभाया है।
पिता की पगड़ी की खातिर
अपने प्रेम को दाँव पर लगाया है,
इतने त्याग के बाद भी
उसके हिस्से में
केवल घर का काम ही आया है।
ना जाने क्यों कोई
समझता नहीं दुविधा
उसके मन की,
वह सरल है, सहज है,
फिर भी अंत में
रह जाती है एकाकी।
स्त्री केवल स्त्री नहीं,
वह स्वयं एक कविता है।
प्रेम, त्याग, ममता
यह उसके जीवन
जीने का एक तरीका है।

सृष्टि
बी.ए.प्रोग्राम तृतीय वर्ष

पश्चाताप से सफलता

यह क्या कर दिया मैंने
अब क्या
किया जा सकता है?
जो भी किया मैंने किया,
अब किसको दोष
दिया जा सकता है।
बीते वक्त को भूलकर,
कर एक नई शुरुआत।
जो हो गया हैं उसे
क्या बदल सकता हैं तू?
यह क्या कर दिया मैंने,
अब क्या किया
जा सकता है?
बढ़ चला कर
नई शुरुआत
रख हौसले बुलंद
रच नया इतिहास
यह क्या कर दिया मैंने,
अब क्या
किया जा सकता है
जो भी किया मैंने
अब मुझे ही तो
ठीक करना है।

चीनू तोमर
बी.ए.प्रोग्राम तृतीय वर्ष

सफलता

बढ़ता रह राही
मंजिल तो मिलेगी ही,
न मिल सका समुंदर
नदी तो मिलेगी ही|
बस रख भरोसा
अपने सपनों पर
और चल
अपने सपनों के पीछे
फिर देख कायनात
एक दिन तेरे आगे झुकेगी ही।
बढ़ता रहेगा तो
मंजिल मिलेगी ही,
ना डर चुनौतियों से
यह चुनौतियां आती हैं
तेरे साहस का पता लगाने
तू अपने साहस से
इन चुनौतियां को डरा
फिर देख किस्मत भी
तेरे आगे झुकेगी ही|
बढ़ते रहना राही
मंजिल तो मिलेगी
न मिल सका समुंदर
नदी तो मिलेगी ही|
तू देख सफलता के सपने
क्योंकि यह सपने होते नहीं
किसी वरदान से कम
फिर देख ये सपने ही
तेरी मंजिल बनकर आएंगे|
बढ़ते रहना राही
मंजिल तो मिलेगी।
न मिल सका समुंदर,
नदी तो मिलेगी ही

आकांक्षा मिश्रा
बी.ए.प्रोग्राम तृतीय वर्ष

हिंदी

मुझे बचाओ
मैं हिंदी हूं, मैं हिंदी हूं
दबी कुचली सी
अपने ही वतन में
दया भरी नज़रों से देखते हैं
मुझे मेरे ही हमवतन
कहने को तो
राजभाषा हूं मैं
इस देश की
किंतु दिया गया हैं मुझे
दिवस एक ही
निजी क्षेत्र को तो छोड़ो
हिंदी क्षेत्र ही दर्शाता है
दुर्दशा मेरी
मुझे बचाओ मैं हिंदी हूं,
दबी-कुचली-सी अपने ही
वतन में ।।

नुपुर जोरासिया
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

शुरुआत एक नए सफ़र की

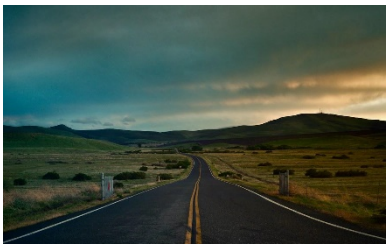

आज शुरू हुआ
जिंदगी का नया सफ़र
दिन था पहला
आज कॉलेज का
खुशी थी मेरी
सातवें माले पर
सोच-सोच कर ही
आनंद आ रहा था
मेरी खुशी थी
नई दोस्त, नए लोगों,
नया सफ़र और नई मंजिल के
बहुत करीब पहुंच जाने का।
घर से निकलते ही
चख लिया मैंने
सफ़र का स्वाद
बस का वह सफ़र
जिस सफ़र को
हम पाँच दोस्तों ने
किया था शुरू।
हम पाँचों की डोली
जहां जाए, एक साथ जाए
ऐसा लगता न जाने
अब कहाँ दंगा मचाएँ
कॉलेज में आकर
ऐसा ही अनुभव हुआ
स्नेह मिला विद्यालय की पुरानी
अध्यापिकाओं जैसा ही
सुना था कि कॉलेज जाओगी
तब पता चलेगा।
ऐसा तो बिल्कुल भी ना था
कॉलेज में आकर
खुशियों का पिटारा
ही खुल गया
और अब मेरी दोस्ती
केवल उन पाँच दोस्तों
तक नहीं थी धीरे-धीरे
मैंने बहुत दोस्त बनाए
और यह सफ़र
यादगार सा बना लिया
अब इस सफ़र का
आखिरी पड़ाव बचा हैं
हर पल को खुशनुमा बनाना है।
इस सफ़र को यादगार बनाना है।

ज्योति
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

एक अच्छी पुस्तक

एक अच्छी पुस्तक
हजारों दोस्तों के बराबर होती है
जबकि एक अच्छा दोस्त
एक लाइब्रेरी के बराबर होता है।

सुकन्या
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

जीना सीख लिया

इस धरती पर,
इंसान ने जीना सीख लिया
कुछ इंसानों ने,
जिंदगी लेना भी सीख लिया।
इतना मतलबी बन बैठा है,
आता है, जाता है
बिन बोले सब कह जाता है।
रात-दिन चुप रहता है,
बातों के ही पुल
अपने मन में बनाता है।
कहना तो चाहता है पर,
सामने वाला सुनना
नहीं चाहता है
जिंदगी तो कटी पतंग
जैसी हो गई है
बाहर वालों के हाथों
खिंचती चली गई है,
दिल के परिंदे दिल में ही
उड़ते चले जाते हैं,
इस संघर्ष भरी दुनिया में-
संघर्ष करते चले जाते हैं
और ऐसे ही-
इस धरती पर
इंसान ने जीना सीख लिया।

कनक मंडल
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

दो पल सुंदर जिंदगी

चलो हंसने की कोई,
हम वजह ढूंढते हैं
जिधर ना कोई गम,
वह जगह ढूंढते हैं।
बहुत उड़ लिए
आसमान में यारों,
चलो जमीन पर ही कहीं,
हम सतह ढूंढते हैं।
छूटा संग कितनों का
जिंदगी की जंग में,
चलो उनके दिलों की
हम गिरह ढूंढते हैं।
बहुत वक्त गुजरा
भटकते हुए अंधेरे में,
चलो अंधेरी रातों में
हम सुबह ढूंढते हैं।

रूपा
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

वह

वह बहुत ही चंचल है,
वह चीजों को समझने की
कोशिश तो करती है,
पर कभी-कभी चीजें
बिगाड़ भी देती है।
माना थोड़ी नासमझ है
पर दिल की साफ है।
पहला कदम उठाने में
थोड़ा डरती है,
पर अगर ठान ले
तो काम पूरा
ईमानदारी से करती है।
पहले अकेले सफर
करने से डरती थी पर
अब अकेले सारे काम
करने की क्षमता रखती है।
मुझे कोई भी मुश्किल आती है
तो मैं सबसे पहले उसे ही बताती हूं
वह मेरे लिए बेहद खास है
और वो 'वह'
कोई और नहीं मैं स्वयं हूं
क्योंकि हम स्वयं से अधिक
ना किसी को समझ पाते हैं
ना समझ सकते हैं
ना समझा पाते है हम स्वयं से
न कभी झूठ बोल सकते हैं
न कभी उसे धोखा दे सकते हैं।
इसलिए वह हम
सबके लिए बेहद खास होता है।

मानसी चौधरी
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

हर सुबह

हर सुबह
खुद को समेटना।
मेरे जज्बातों के पुर्जों से
ढांचा तैयार करना।
और जमाने के सामने
पेश हो जाना।
हंसना, बातें करना
सभी को सुनना
कुछ कह भी देना।
सबके काम
खत्म हो जाते हैं।
और भीड़ गायब हो जाती है।
बस सन्नाटे का शोर
सुनाई पढ़ता है।
फिर पुर्जों के मरे
होने का एहसास होता है।
और मैं शून्य हो कर
बिखर जाती हूं।
अगली सुबह फिर से वही
समेटना, ढांचा तैयार करना
और पेश हो जाना।

साक्षी त्रिवेदी
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

अजीब होता है इंसान भी

कितना अजीब होता है
न इंसान भी
किसी के दिमाग के साथ
खेल जाता है और
उसे पता भी नहीं चलने देता
किसी की इच्छाओं को
रौंद कर उसे
प्यार का नाम दे देता है
तुम्हें आज तक
किसी चीज़ के लिए
रोका है भला
कहकर कभी
उस पर विश्वास नहीं करता...
कितना अजीब होता है
न इंसान भी,
छल कपट की न जाने
कितनी चादर ओढ़े है
लेकिन फिर भी
केवल सामने वाले को
बेपरदा करने की
फिराक में बैठा है।
एक अंजान शहर में
अंजान लोगों को
अपना बना कर
अपनों से अंजान हो जाता है,
फिर उन्हीं अंजान लोगों से
धोख़ा खाकर
अपनों पर भी विश्वास
न करने की नसीहत देता है,
कितना अजीब है न ये इंसान भी।

मानसी चौधरी
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

दो पल की जिंदगी

आज बचपन,कल जवानी।
परसों बुढ़ापा,
फिर खत्म कहानी।
चलो हंस कर जिएँ
फिर न आने वाली
यह रात सुहानी।
जो बीत गया वो बीत गया।
क्यों करते हो आने वाले
कल की चिंता।
दो पल की जिंदगी है
आज और अभी जियो,
दूसरा पल हो या ना हो।

तन्वी मलिक
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

विदाई

वह पल
आता ही है ज़िंदगी में
जब एक लड़की को
छोड़ना पड़ता है
घर अपना
और जाना पड़ता है
पराए घर
जब छूट जाता है
अपनों का साथ
मां का प्यार
बाप का दुलार
जब छूट जाता है
संगी-सहेलियों का साथ
उस वक्त में उस पल में
सब कुछ ठहर जाता है
क्योंकि उसके जीवन में
सब कुछ बदल जाता है
उस वक्त उस पल को
कहते हैं विदाई
अब अपनों से
बिछुड़ने की घड़ी है आई।

शुभिका
बी.ए.प्रोग्राम तृतीय वर्ष

वह गगन

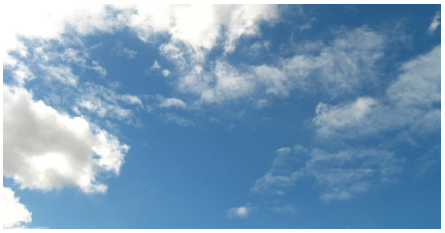

वह गगन
जो उदासीनता के
अंधकार में लिपटा,
समय आने पर
उम्मीद की किरण-सा
चमकता है।
वह नीलांबर
जो शांति का प्रतीक है,
संध्या में है
सुंदरी समान मन बहलाता,
जो गगन अपने बादलों से
कभी वही रुपांतरण
का विस्मय रचता,
कभी गरजता
वीर योद्धा बन जाता।
बार बार उठता है
सवाल कि
क्या यही धरा का
रसमय नाटक है,
जो कहीं न कहीं
जीवन की कहानी
कह जाता है।

आदित्य प्रभाकरण
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

मेरे देश को जागृत होने दो

जहाँ मन हैं निर्भय
और मस्तक हैं ऊंचा,
जहाँ ज्ञान है मुक्त,
जहाँ पृथ्वी विभाजित
नही हुई है
छोटे-छोटे खंडों में।
संकीर्ण मानसिकता
की दीवारों में,
जहाँ शब्द सब निकलते हैं
सत्य की गंभीरता से।
जहां अविश्रांत प्रयास
उसका हाथ बंटा रहे हैं
परिपूर्ण की ओर।
जहां स्पष्ट न्याय का
झरना भूला नहीं है,
अपना रास्ता।
युवा मन को नेतृत्व
दे रहे हो तुम
ले जा रहे हो निरंतर
विस्तृत विचार और
गति के मार्ग पर
करबद्ध प्रार्थना है
हे मेरे परमपिता
मेरे देश को जागृत होने दो।

कोमल पाल
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

मैं

मैं शांत थी,
मैं बेखबर थी,
आने वाले कल से अनजान थी,
राहें कठिन थीं,
पर उन पर चलने की
झलक खूबसूरत थी|
उस खूबसूरती में
कुछ गोपनीय था,
मैं उत्सुकता में फूली थी,
चारों ओर उल्लास था,
पर मैं चुप थी
इस चुप्पी में न जाने
कौन सी हलचल थी,
मेरा मन
कुछ और कहता,
दिमाग
कुछ और कहता था|
मुझे कल की चिंता थी,
मैं खोयी-सी रहती थी,
पर फिर भी खुश थी।

विधि अहलावत
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

मेहनत करो

जो करता हैं
मेहनत भाई
उन्हीं की है
किस्मत खुल पाई ,
बिना परिश्रम के
कभी किसी ने
सफलता की राह न पाई।
नन्ही सी चिड़िया
को देखो
उससे मेहनत
करना सीखो ,
बना रही जो घर अपना
जीवन को
न समझो सपना ।
आलस की चादर उतार दो
जीवन का है
बस यही धर्म,
मेहनत करो, चलते रहो
जीवन का बस यही कर्म।

यामिका
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

दोस्ती

हर दोस्ती दिल के करीब नहीं होती,
गमों से जिंदगी दूर नहीं होती,
ए मेरे दोस्त ,दोस्ती संजो कर रखना,
हर किसी को दोस्ती नसीब नहीं होती।

अनुराधा कुमारी
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

मगर

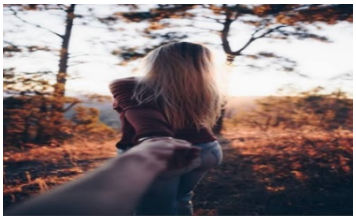

हर किसी की नजर में,
सवाल नजर आता है।
लोग जितनी भी
हमदर्दी जताए,
यह दिल संभाल नहीं पाता हैं ।
मुझे यह यकीन था, कोई तो
सही राह दिखाएगा।
हर हौसले देने वाला
मगर,उलझन
कुछ और बढ़ा जाता है।

अंकिता सिंह
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

तुम स्वयं के लिए काफी हो

यूँ तो कहने के लिए तुम्हारे, हमारे व सब के पास सब कुछ है और कुछ भी नहीं है; पर जो है वह हमारे लिए काफी है। हां इस कथन से मेरी बात थोड़ी अटपटी व घुमावदार लगे; पर इस पर थोड़ा गौर करोगे तो समझ आएगा कि मैं यह कहना चाहती हूं कि सब को सब कुछ नहीं मिलता | कुछ लोग ऐसे होते हैं जो हमारे लिए हमारा सब कुछ बन जाते हैं और हमारे अभावों को पूरा कर देते हैं। वह हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ हैं और उनके आगे सब कुछ फीका सा लगने लगता है| नहीं, नहीं मैं यहाँ प्रेमी या प्रेमिकाओं की बात नहीं कर रही| वह तो कोई भी हो सकता है जैसे तुम्हारे मित्र ,भाई ,बहन आदि । जैसे समय किसी के लिए नहीं रुकता, उस का पहिया चलता ही रहता है; वैसे ही समय बदलता हैं और जिंदगी में नया मोड़ आता है। नये दोस्त मिल जाते हैं । एक समय के बाद प्रेम संबंध उबाऊ हो जाते हैं| तब बचते हो- तुम, बस अकेले तुम।

मैं यह नहीं कहती कि तुम सबको छोड़ दो, अकेले रहो ,पर हां दूसरों में खुशी ढूंढते समय बस खुद को न भूलो ,क्योंकि एक समय ऐसा आयेगा कि जब तुम बिलकुल अकेले पड़ जाओगे| बेशक कुछ खास समय के लिए ही सही, तुम अपने आपको जानो | यह समझो कि दुनिया में कोई किसी का नहीं होता ,अपने ही अपने होते हैं| कई बार वे भी पराए हो जाते हैं इसलिए खुद में खुशी ढूंढो । अपने आपको इतना सशक्त बनाओ कि तुम्हें कभी भी अकेलापन महसूस न हो | कोशिश करो,पहले झिझक होगी; अकेलेपन से घबराहट होगी , रोना आयेगा , फिर आदत पड़ जायेगी और फिर अच्छा लगने लगेगा ।

अपना ध्यान रखें ,खुद पर ध्यान दें। |कहने को तो लोग किसी के लिए भी गाना गा सकते हैं कि मेरे लिए तुम काफी हो; पर खुद के लिए भी कभी सोचो और खुद ही खुद के लिए पर्याप्त बनो।

दीप्ति
बी.ए. प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

तीसरी दुनिया

एक दुनिया आप की हैं और एक मेरी। हम दोनों ही अपने हिस्से की दुनिया में खोए रहते हैं। मेरी दुनिया की सीमा आपकी दुनिया से परे हैं और आपकी दुनिया में मेरी कोई आवाजाही नहीं। इन सब से इतर एक और दुनिया हैं जो हम दोनों के मध्य है। उसमें किसी अन्य का प्रवेश नहीं है। वह हर समय मौजूद तो नहीं होती;परंतु जब भी हम मिलते हैं, बातें करते हैं तब क्षणभंगुर-सी अस्तित्व में आ जाती है। मैं चाहकर भी इस तीसरी, नश्वर दुनिया को अनदेखा नहीं कर सकती हूं। जब कभी मैं अपनी दुनिया की दरारों से झांक कर देखने की कोशिश करती हूं, तो मुझे इसके वजूद , इसकी जीवंतता पर संदेह हो उठता है। मन-मस्तिष्क में केवल यही प्रश्न गूंजता हैं - वह तीसरी दुनिया "है" भी या नहीं? कहीं वह मेरा वहम तो नहीं? क्या उसकी उपस्थिति आपको भी महसूस होती है? यदि हां , तो क्या वह उतनी ही स्पष्ट है जितनी वह मेरे हृदय में है? हृदय की उपस्थिति मान्य हैं या अमान्य?मन में खयाल आता हैं कि क्या मैं आपकी दुनिया में कभी प्रवेश कर सकूंगी। आख़िर वह क्या कारण हैं जो हमें एक ही स्थान पर रहकर एक जादुई दुनिया बनाने पर मजबूर कर देते हैं। क्या मैं उस काबिल ही नहीं कि आपकी दुनिया में प्रवेश पा सकूँ |

अगर आपकी दुनिया में प्रवेश ना भी मिला तो क्या.... यह तीसरी, जादुई दुनिया का विचार मुझ पर इतना हावी है कि मैं उस स्वप्न मंजूषा से कभी बाहर ही आना नहीं चाहती। मैं इसी के विस्तार में खुश हूं। मैं अपनी भ्रांति में खुश हूं। अपनी विकलता में खुश हूं। क्या आप अपने सत्य में खुश हैं?

ईशिका आर्यन
बी.ए.प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

घर

घर किसे कहते हैं- कोई कहेगा कि ईंटों से बने हुए मकान को घर कहते हैं, कोई कहेगा कि परिवार को घर कहते हैं।मैं कहती हूँ कि जहां पूरा परिवार एक साथ प्रेम पूर्वक रह सके, जहां सभी का भोजन एक साथ बन सके, सब आपस में मिल बैठकर काम कर सकें - उसे घर कहते हैं। आजकल संयुक्त परिवार एकल परिवार में बदल रहे हैं क्योंकि गांवों में लोगों को काम नहीं मिलता, बच्चों को शिक्षा नहीं मिलती तो वह शहर आना चाहते हैं- चाहे उनकी जेब में पैसे ना हों, चाहे उन्हें अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में ही क्यों ना पढ़ाना पड़े।

जब संसार पर कोरोना की आफत आई और सब अपने अपने घरों में बंद हो गए तो सब अलग-अलग ढंग से तनाव में आ गए; लेकिन इस स्थिति में हमें अपने परिवार के साथ बैठकर समय बिताने का मौका दिया इसी समय में वीडियोकॉल के माध्यम से हमने अपने पास के और दूरदराज के रिश्तेदारों से बात की।अब तो एक नया चलन आ गया है; अब वर्क फ्रॉम होम हो गया है। जिन्हें कंप्यूटर चलाना आता है ,जो पढ़े लिखे हैं, जिनका काम कंप्यूटर पर हो सकता है; वह सभी वर्क फ्रॉम होम करते हैं।

इस दौर में विद्यार्थियों को एक सुविधा लगने लगी कि उन्हें घर बैठे आसानी से पढ़ाई करने को मिल रही है। न ट्रैफिक का सामना करना पड़ रहा है ,न लड़कियों को लड़के परेशान कर सकते हैं; लेकिन क्या समस्याएं खत्म हो जाती हैं;नहीं, तब भी एक समस्या आती है नेटवर्क इश्यू यानी नेटवर्क का सही ना चलना।

पर यही जीवन है। अपना और अपने घर का ध्यान रखते हुए हमें काम भी करना है और आनंद भी उठाना है; साथ ही यह प्रार्थना भी करनी है कि फिर कभी ऐसी परिस्थितियों का सामना ना करना पड़े।

सपना निधि
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

माँ

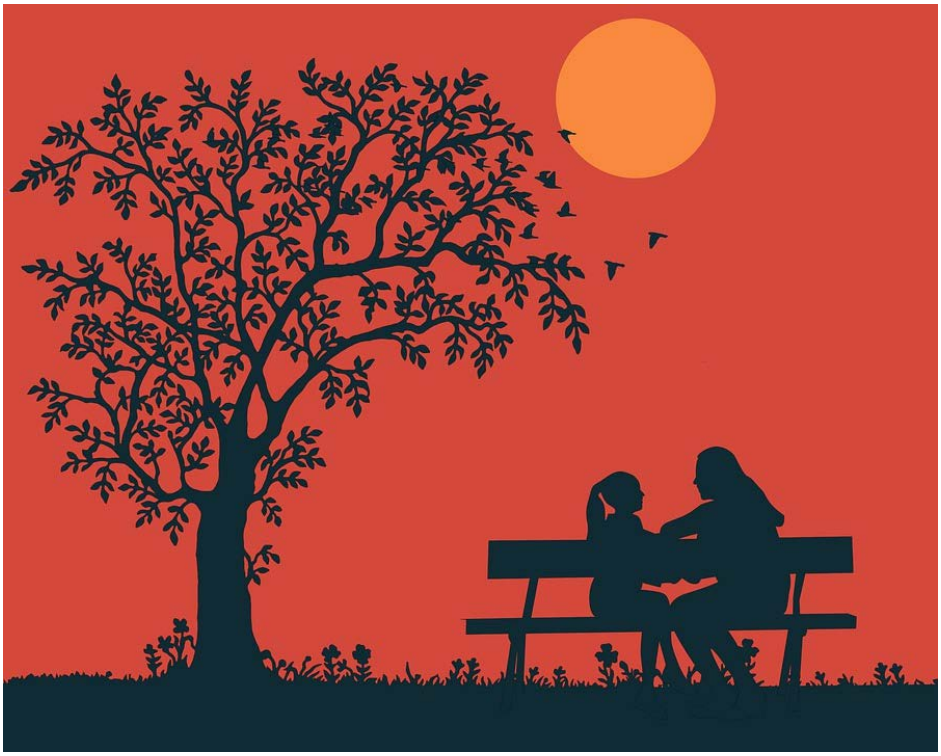

माँ केवल दो अक्षरों का शब्द हैं जिसका अर्थ हैं पैदा करने वाला। सब की एक ही माँ होती हैं जो हमें पैदा कर के पाल पोसकर बड़ा करती है। पृथ्वी पर तो केवल सभी की माँ केवल एक ही होती हैं जिसे हम माँ, मम्मी, मम्मा, माई और मदर कहकर बुलाते हैं।

जब छोटे बच्चों को किसी से डर लगता हैं तो वह माँ के आँचल में छिप जाता है। माँ की अपने बच्चों पर ममता रहती है। मुझे अपनी माँ का प्यार खूब मिलता है; जब मैं किसी काम में व्यस्त रहती हूँ और भोजन नहीं कर पाती हूँ तो माँ अपने हाथों से खिलाती हैं। ओ माँ तू कितनी अच्छी, कितनी प्यारी है। तू तो हमारे रास्ते में आने वाले काँटों को साफ कर देती है। माँ खुद दुःख में रहकर अपने बच्चों को खुश रखती है। जो बच्चा बिगड़ा होता है, माँ उस पर ज्यादा ध्यान देती है। जब मैं कहीं बाहर जाती हूँ और माँ से दूर रहती हूँ तो मुझे अपनी माँ की याद आती है। हमें हमेशा याद रखना चाहिये कि हम माँ की बदौलत ही इस संसार में आये हैं, उसी ने हमें प्राथमिक शिक्षा दी है। माँ को कभी परेशान मत करना। अगर तुम्हारी माँ बूढ़ी हो जाये तो उन्हें उनके अनुरूप ही चलने देना और माँ को कभी भी किसी भी चीज़ के लिए मना मत करना । हमेशा माँ की बात मानना। माँ का प्रेम अनंत है।

सपना निधि
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

सफर खूबसूरत है

हर मंजिल तक किया गया सफ़र सच में बेहद खूबसूरत होता है; क्योंकि उस सफ़र को तय करने में हमारी कई दिनों, महीनों, सालों की मेहनत होती है। उस सफ़र में हम उतार-चढ़ावों को महसूस करते हैं, समझते और देखते हैं- जो जिंदगी हमें सिखाना चाहती है। हम कई नए अनुभव करते है, नए लोगो से मिलते हैं, नई चीजें सीखते हैं और हर चीज़ को देखने एवं समझने का एक नया नज़रिया पाते हैं ।कभी-कभी हम थक कर बैठ जाते हैं, लेकिन फिर एक नए जोश के साथ उठ खड़े होते हैं और फिर से कड़ी मेहनत करते हैं, तब हम यही पाते हैं कि सफ़र जो हमने अपनी मेहनत, लगन, और शिद्दत से तय किया है, वह हमारी मंजिल से भी बेहद खूबसूरत था।

मानसी चौधरी
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

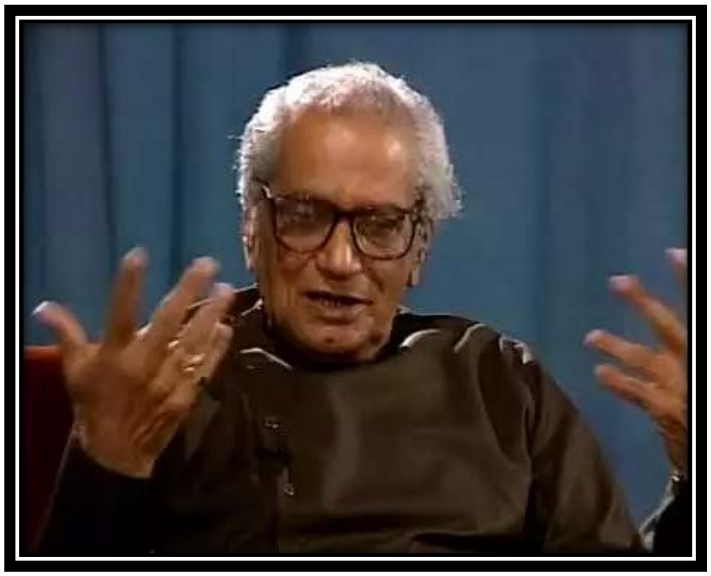

नरेश मेहता

जन्म शताब्दी वर्ष

15 फरवरी 1922 - 22 नवंबर 2000

तूलिका और रंग-संयोजन

मेरा गिटार

`

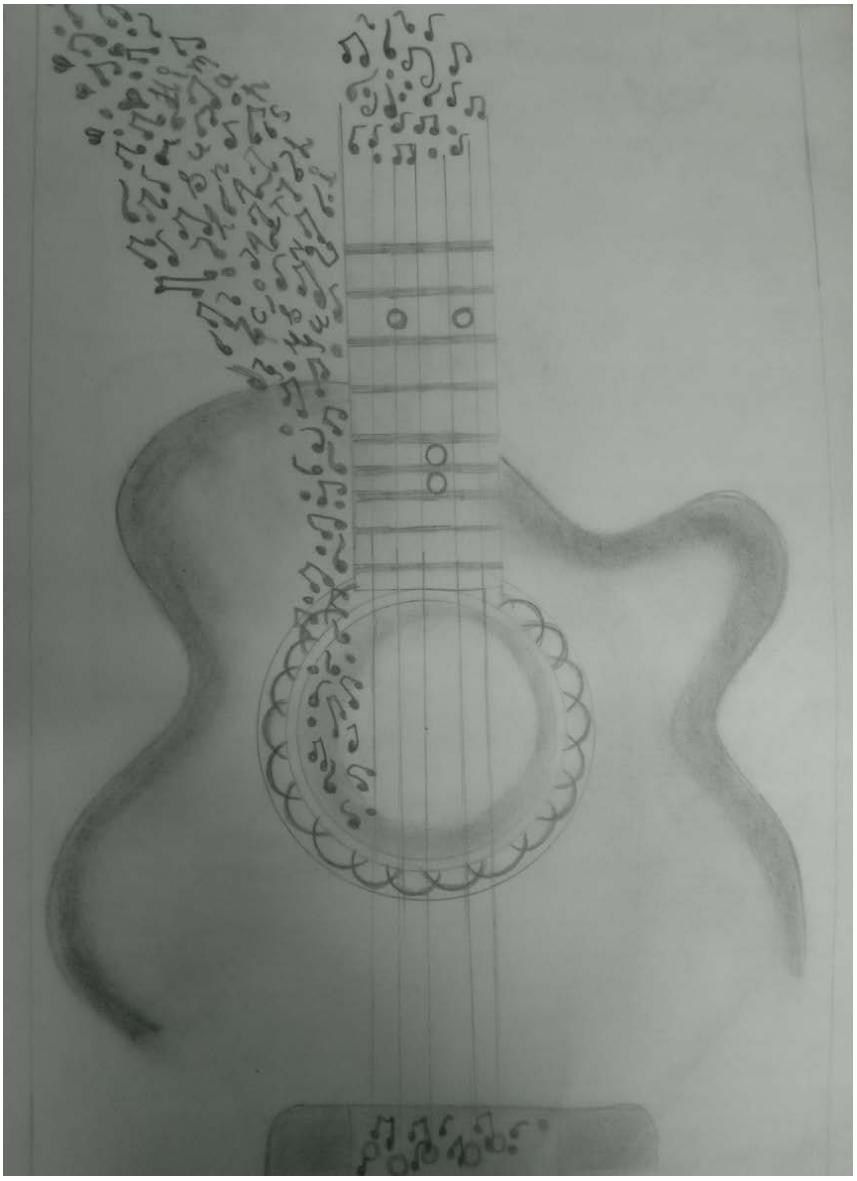

हिमांशी कोली
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

पत्तियां

हिमांशी कोली
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

छवि

हिमांशी कोली
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

यूँ ही सोचते हुए

हिमांशी कोली
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

हम-तुम

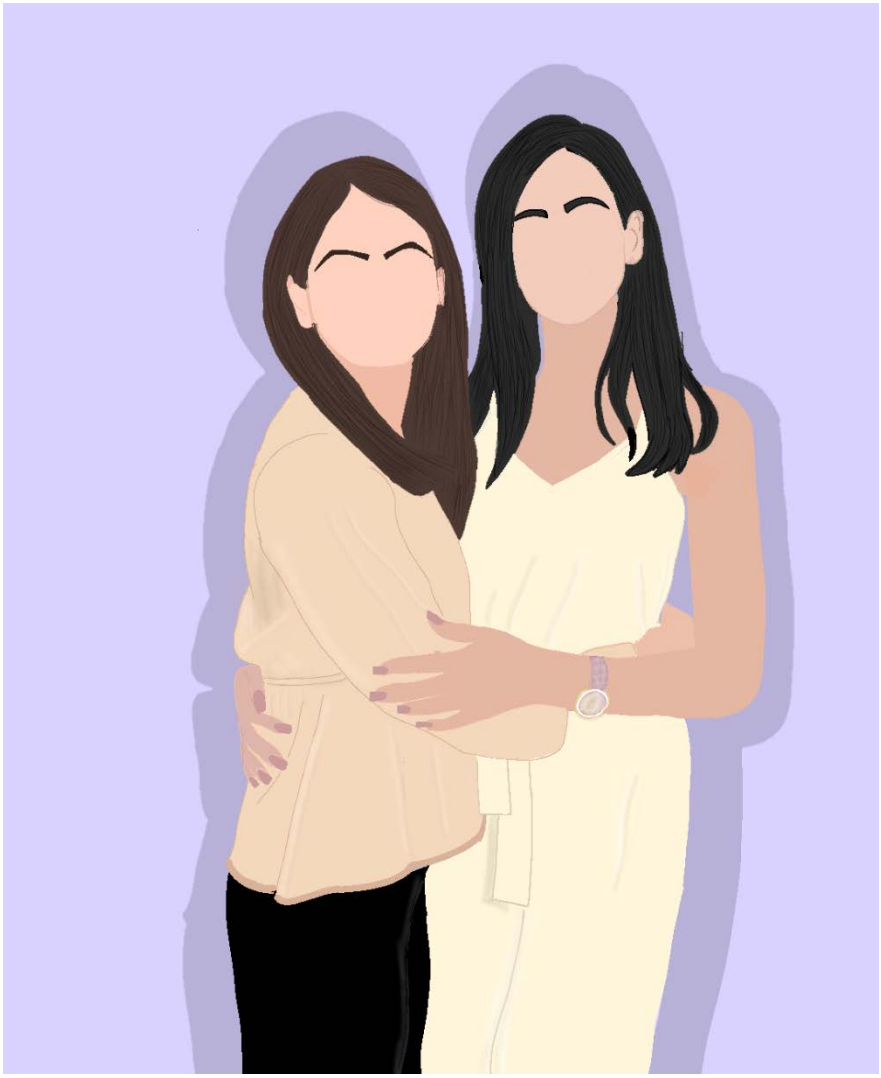

अदिति सेतिया
बी. कॉम प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

सामने देखते हुए

अदिति सेतिया
बी. कॉम प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

रात्रि दृश्य

राशि व्यास
बी. ए. प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

कैमरे की आँख और कॉलेज परिसर

मेरा प्यार

अनुशिखा चौधरी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

हरा और सूखा पेड़

अनुशिखा चौधरी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

भरपूर खिला

अनुशिखा चौधरी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

प्रवेश मार्ग

अनुशिखा चौधरी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

श्वेत-श्याम

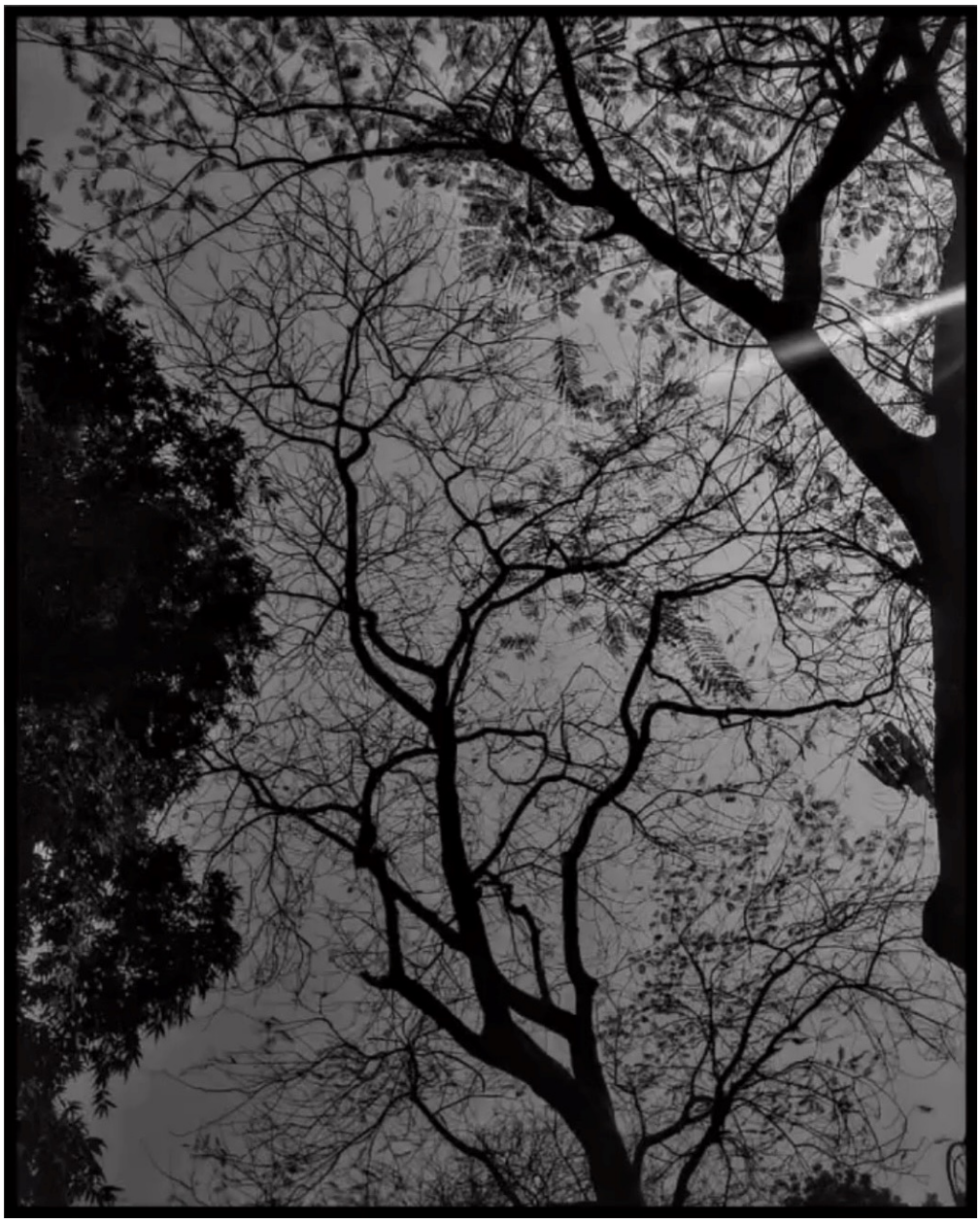

अनुशिखा चौधरी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

औचक ही

अनुशिखा चौधरी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

दीवारों में बंधा आकाश

अनुशिखा चौधरी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

उत्सव सज्जा

अनुशिखा चौधरी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

मेरा सुंदर कॉलेज

मुस्कान धनकर
बी.ए. प्रोग्राम तृतीय वर्ष

झांकती किरणें

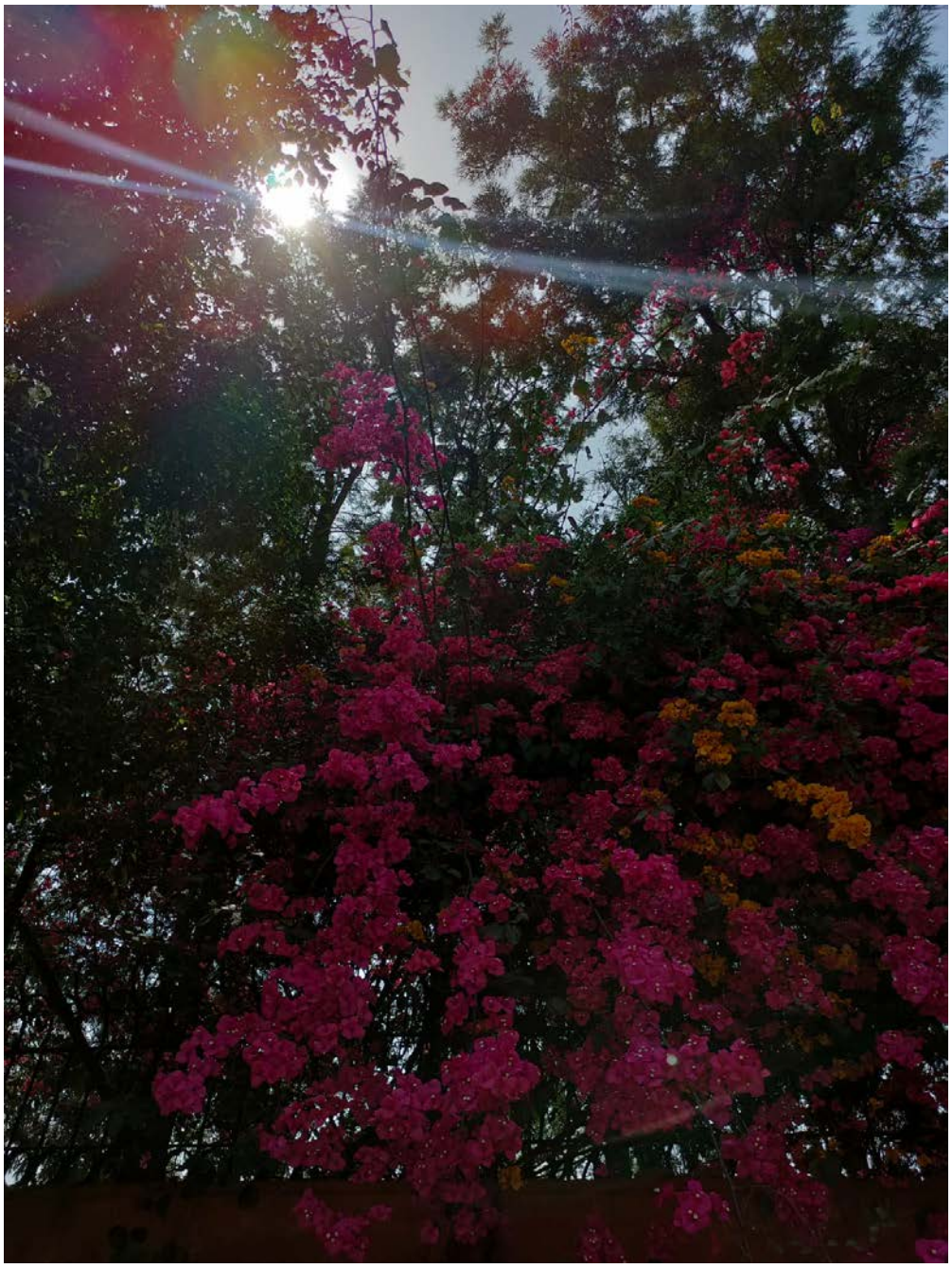

मुस्कान धनकर
बी.ए. प्रोग्राम तृतीय वर्ष

कोमल स्पर्श

मोनालिसा मंडल
बी. ए. प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

सामने से

मोनालिसा मंडल
बी. ए. प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

अकेला फूल

तेजस्विनी बैंदा
बी.ए. प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

सूरज डूबते हुए

राशि व्यास
बी. ए. प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

छायापथ

राशि व्यास
बी. ए. प्रोग्राम द्वितीय वर्ष

मैत्रेयी महाविद्यालय

प्रतिबद्धता

स्त्री सशक्तिकरण
हेतु
मैत्रेयी महाविद्यालय
को
"ज्ञान – केंद्र"
के रूप में प्रतिष्ठित करना